रूहों को हकें बेसक, भेज्या पैगाम बेसक।
इस्क बेसक ले आइयो, भेजी बेसक रूह बुजरक।। ६२ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज ने अपना बेशक पैगाम कुरान भेजा और बड़ीरूह श्यामाजी महारानी को भेजकर कहलाया कि बेशक इश्क लेकर हे रूहों, वापस परमधाम आ जाना।

इस्क रूहों कम बेसक, हादी ज्यादा इस्क बेसक।
सब थें इस्क बढ्या, बेसक इस्क जो हक।। ६३ ।।

रूहों का इश्क कम है, श्यामा महारानी का इश्क ज्यादा है और श्री राजजी महाराज का इश्क सबसे बड़ा है।

महामत कहे बेसक मोमिनों, बेसक बेवरा कमाल।
फरामोसी में हक का, पाइए बेसक इस्क हाल।। ६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज के इश्क का ब्यौरा कमाल का है। हमारी फरामोशी की अवस्था में भी श्री राजजी महाराज का इश्क मिलता रहा।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ७६९ ।।

सूरत अर्स अजीम की बातूनी रोसनी

रूहअल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अर्स अपनी जान।
पिउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हें अपनी अंगना जानकर श्यामा महारानी को भेजा है। तुम इनकी पहचान क्यों नहीं करते?

अरवाहें जो अर्स की, सो उरझियां माहें फरेब।
सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत वेद कतेब।। २ ।।

परमधाम की जो रूहें है, वह खेल में उलझ गई हैं। श्यामा महारानी ने वेद-कतेब की हकीकत कहकर उनकी उलझनों को मिटाकर परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं।

मजकूर बका बीच में, किया हक हादी रूहन।
दई फरामोसी हांसीय को, बीच अपने अर्स मोमिन।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर इश्क की बातें कीं और इसलिए अपने घर परमधाम में मोमिनों को हंसी के वास्ते बेसुधी दी।

ऐसी तुमें देखाऊं दुनियां, और पनाह में राखों छिपाए।
ओ तुमें ना चीन्ह हीं, ना तुमें ओ चिन्हाए।। ४ ।।

श्री राजजी ने कहा मैं तुम्हें चरणों तले बिठाकर ऐसी दुनियां दिखाऊंगा जहां तुम्हें कोई नहीं पहचानेगा और न तुमको पहचान होगी।

मैं छिपोंगा तुमसों, तुमें नजर में ले।
पाओ ना अर्स या मुझे, काहूं तरफ न पाओ ए।। ५ ।।

मैं तुम्हें अपनी नजर में लेकर छिप जाऊंगा। फिर तुम अपने घर को तथा मुझे नहीं पा सकोगे।

Nijanand App

ढूंढ़ोगे तुम मुझको, बोहोतक सहूर कर।
मेरा ठौर न पाओ या मुझे, क्योंए न खुले नजर।। ६ ।।

तुम बहुत विचार करके मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु मुझे या परमधाम को किसी तरह से भी नहीं पाओगे।

आंखां होसी खुलियां, मेरी बातां करो माहों-माहें।
ढूंढ़ोगे माहें बाहेर, और पावे ना कोई क्याहें।। ७ ।।

तुम्हारी आंखें खुली होंगी और आपस में मेरी बात करोगी। पिंड ब्रह्मांड में ढूंढ़ोगी। पर कोई भी कहीं नहीं पाओगी।

क्या कहूं भेजोगे हमको, के इतथें करोगे दूर।
के इतहीं बैठे देखाओगे, हमको अपने हजूर।। ८ ।।

रूहें कहती हैं कि क्या हमको कहीं बाहर भेजोगे या यहां से कहीं दूर करोगे या हमको अपने चरणों में बिठाकर खेल दिखाओगे।

इतहीं बैठे देखोगे, खेल हांसी का फरामोस।
सहूर करोगे बोहोतक, पर आए न सको माहें होस।। ९ ।।

श्री राजजी कहते हैं कि यहीं बैठे-बैठे देखोगे। यह खेल हंसी का है, इसलिए बेहोशी में देखोगे। प्रयास भी बहुत करोगे मगर होश में नहीं आ सकोगे।

ज्यों जाने बेसुध हुए, जैसे अमल चढ़्या जोर।
सो तुम क्यों ए ना सुनोगे, हादी करे बोहोतक सोर।। १० ।।

तुम ऐसी बेहोश हो जाओगी कि जैसे ज़ोरदार नशा चढ़ा हो। श्यामा महारानी बहुत पुकारेंगी, परन्तु तुम किसी तरह से नहीं सुनोगी।

न तुमें अमल ना नींद कछू, पर ऐसा खेल हांसी का ए।
खेलें हंसें बातें करें, याद आवे ना हक घर जे।। ११ ।।

तुम्हें न तो नशा होगा, न नींद। यह इस तरह की हंसी का खेल होगा। तुम खेलोगी, हंसोगी, बातें करोगी, परन्तु मेरी और परमधाम की याद नहीं आएगी।

ऐसा इलम हादीय पे, देखावे हक वतन।
आप पाओ पल में जगावहीं, इन इलम आधे सुकन।। १२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी का ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान होगा जो मेरी और घर की पहचान कराएगा। इनके ज्ञान के आधे शब्द से ही पाव (चौथाई) पल में जग जाओगी।

जो हुए होवें मुरदे, तिनको देत उठाए।
इन विध इलम लदुन्नी, पर तुमें न सके जगाए।। १३ ।।

मेरा तारतम ज्ञान ऐसा बलशाली होगा कि दुनियां के मुरदार (मृतप्राय) जीवों को सावचेत कर देगा, परन्तु तुम्हें नहीं जगा सकेगा।

ऐसी देखोगे दुनियां, हक न काहूं खबर।
न सुध अर्स न आपकी, कई ढूंढ़त सहूर कर।। १४ ।।

तुम ऐसी दुनियां को देखोगे, जहां हक की खबर देने वाला कोई नहीं होगा। वहां न परमधाम की सुध होगी न अपनी सुध होगी, जबकि कई लोग विचार करके ढूंढ़ेंगे।

Nijanand App

ना सुध मेरी ना वतन की, आपुस में जाओगे भूल।
ना सुध मेरे कागद की, ना सुध मेरे रसूल।।१५।।

तुम्हें मेरी और घर की सुध नहीं रहेगी। आपस में भूल जाओगे वहां जाकर मेरे कुरान की तथा रसूल की भी पहचान नहीं रहेगी।

लिखी इसारतें रमूजें, निसान हकीकत।
सुध कछू तुमें ना परे, भूलोगे मेरी न्यामत।।१६।।

कुरान में सारी हकीकत को इशारों और गुप्त शब्दों में लिखकर भेजूंगा। तुम मेरी इस न्यामत को भूल जाओगे।

ऐसा फुरमान भेजसी, और याद देसी रसूल।
जिन अंग इस्क तिनका, क्यों होसी ऐसा सूल।।१७।।

मैं ऐसा कुरान भेजूंगा सो रसूल साहब तुमें याद दिलाएंगे, कि जिनके अंग इश्क के हैं उनकी हालत ऐसी क्यों होगी?

भूलोगे तेहेकीक तुम, मेरी पाओ ना तुम खबर।
ए खेल देखे ऐसा होएसी, ना सुध आप ना घर।।१८।।

तुम निश्चित ही भूल जाओगे। मेरी ख़बर भी देने वाला कोई नहीं होगा। यह खेल देखकर ऐसा हो जाएगा कि तुम्हें अपनी और घर (परमधाम) की सुध नहीं रहेगी।

एक दूजी आपुस में, रहे ना रूह चिन्हार।
ना चीन्हो बड़ी रूह को, ना कछू परवरदिगार।।१९।।

तुम एक दूसरे को आपस में भी नहीं पहचान सकोगी, इसलिए बड़ी रूह श्यामाजी को और अपने धनी को न पहचान सकोगी।

रूहें कहें हांसी होसी अति बड़ी, तुम हूजो सबे हुसियार।
क्यों ए न भूलें आपन, जो खेल जोर करे अपार।।२०।।

रूहें आपस में कहती हैं कि तुम सब होशियार हो जाना बहुत बड़ी हंसी होगी। इसमें हमें किसी तरह से भूलना नहीं है चाहे माया कितना ही जोर लगा ले।

अपन सामी हांसी करें हकसों, चले ना खेल को बल।
अपन आगूं चेतन हुइयां, रहिए एक दूजी हिल मिल।।२१।।

हम श्री राजजी महाराज के सामने आकर हंसी करेंगे कि तुम्हारे खेल की कुछ भी ताकत नहीं चली। हम पहले से ही सावचेत हो गए हैं, इसलिए एक दूसरे से हिल-मिलकर रहना।

जब आगूं से खबर करी, क्या करे फरेब असत।
इस्क हमारा कहां जाएसी, क्या करसी नहीं मदत।।२२।।

जब पहले से ही हमें खबर मिल गई है तो यह झूठी माया हमारा क्या करेगी? हमारा इश्क कहां जाएगा? क्या वह मदद नहीं करेगा?

Nijanand App

इस्क का बल भान के, क्या फरेब होसी जोर।
निसबत अपनी हकसों, क्यों देसी मरोर।। २३ ।।

क्या यह झूठा खेल इतना जोरदार होगा कि हमारे इश्क की ताकत को तोड़ देगा? हम तो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, इसलिए माया हमें कैसे हराएगी?

दूर तो कहूं जाए नहीं, बैठे पकड़ हक चरन।
तो फरामोसी बल क्या करे, आपन आगूं हुइयां चेतन।। २४ ।।

हम कहीं दूर तो जा नहीं रहे हैं। चरण पकड़कर बैठे हैं। पहले से ही सावचेत हो गए हैं। अब फरामोशी की ताकत हमारा क्या करेगी?

कहें रूहें एक दूजी को, नजीक बैठो आए।
जिन कोई जुदी परे, रहिए अंग लपटाए।। २५ ।।

रूहें आपस में एक दूसरे से कहती हैं कि पास में आकर अंग से अंग लिपटाकर बैठो जिससे कोई अलग न हो जाए।

हाथों-हाथ न छोड़िए, लग रहिए अंगों अंग।
इन बिध एक दिल राखिए, कोई छोड़े ना काहू को संग।। २६ ।।

हम एक दूसरे के हाथ न छोड़ें। अंग से अंग लगाकर बैठें और इस तरह से एकदिली रखकर कोई किसी का साथ न छोड़े।

हम हमेसा एक दिल, जुदियां होवें क्यों कर।
हक खेल देखावहीं, कर आगे से खबर।। २७ ।।

हमारी सदा से एकदिली है। अलग-अलग कैसे होंगे। श्री राजजी महाराज पहले से सावचेत करके खेल दिखा रहे हैं।

अंग जुदे ना हो सकें, तो क्यों होए जुदे दिल।
एक जरा जुदे ना होए सकें, अंग यों रहें हिल मिल।। २८ ।।

जब हमारे तन जुदा नहीं हो सकते तो दिल कैसे जुदा होंगे? इस तरह से तन और दिल हिल-मिल गए हैं, इसलिए एक पल के लिए भी हम अलग नहीं होंगे।

रूहें कहें एक दूजी को, जिन अंग जुदा करो कोए।
इन विध रहो लपटाए के, सब एक वजूद ज्यों होए।। २९ ।।

रूहें एक दूसरे से कहती हैं कि कोई भी अपने अंग को जुदा मत करना। इस तरह से लिपट जाओ जैसे हम सब एक तन हों।

रूहें रब्द कर बैठियां, जानें सामी हांसी करें हकसों।
पर हकें हांसी ऐसी करी, सुध जरा न रही किनमों।। ३० ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के सामने रब्द करके यह विचार कर कि हम खेल के बाद श्री राजजी पर हंसी करेंगी, बैठ गयीं तब श्री राजजी महाराज ने ऐसी हंसी की कि किसी को थोड़ी सुध भी नहीं रह गई।

Nijanand App

एक वजूद होए बैठियां, खेलें ऐसी दई भुलाए।
कौल फैल हाल सब जुदे, दिल ऐसे दिए फिराए।। ३१ ।।

सब एक तन होकर बैठी हैं, परन्तु खेल ने ऐसा भुला दिया कि सबकी कहनी, करनी, रहनी अलग-अलग हो गई। ऐसे हमारे दिल घूम गए।

जात भांत जिनसें जुदी, जुदी जुदी जिमी पैदाए।
सब बैठियां अंग लगाए के, खेलें कहूं दिए उलटाए।। ३२ ।।

संसार में मोमिन जुदा जुदा जातियों में, रस्मों, रिवाजों में तथा अलग-अलग प्रान्तों में आ गए। परमधाम में सब अंग से अंग जोड़कर बैठे हैं, परन्तु यहां खेल में उलटी हालत होकर सब अलग-अलग हो गए।

जुदे जुदे कबीलों, कर बैठियां अपना घर।
जानें हम इत कदीम के, जुदे होवें क्यों कर।। ३३ ।।

संसार में अलग-अलग कबीलों में अपना-अपना घर बनाकर बैठ गए और मानने लग गए कि हम सदा यहीं के है। यहां से अलग कैसे हो सकते हैं?

सो भी कबीले स्वारथी, दुख आए न कोई अपना।
जात वजूद भी रंग बदले, ज्यों फना होत सुपना।। ३४ ।।

वह भी ऐसे स्वार्थी कबीले हैं कि संकट में कोई भी अपना नहीं बनता। दु:ख आने पर सब रिश्तेदार अपना रंग बदलते हैं।

रूहें सुध ना एक दूजी की, ना मिनों मिनें पेहेचान।
याद बिना जात मुद्दत, काहूं सुपने न आवें सुभान।। ३५ ।।

खेल में एक दूसरे को किसी की सुध नहीं है और न आपस में पहचान है। श्री राजजी महाराज की स्वप्न में भी याद नहीं आती। कई मुद्दतें बीत जाती हैं।

खेल तो है एक खिन का, रूहें जानें हुई मुद्दत।
कई कुरसी हुई कई होएसी, गईयां भूल मूल सोहोबत।। ३६ ।।

खेल तो एक क्षण का है। रूहें जानती हैं कि मुद्दत बीत गई। इनकी कई पीढ़ियां हो गईं। कई होंगी, परन्तु मूल परमधाम का सम्बन्ध भूल गईं।

आइयां झूठे कबीले में, भूल गईयां बका वतन।
सुख अर्स अजीम के, हाए हाए फरेब दिया दुनी इन।। ३७ ।।

झूठे कबीले में आकर अखण्ड घर को भूल गईं। परमधाम के अखण्ड सुखों को भी हाय-हाय इस झूठी दुनियां ने छल दिखाकर भुला दिया।

तिन कबीले में रेहेना, पूजें पानी आग पत्थर।
बेसहूर इन भांत के, जान बूझ जलें काफर।। ३८ ।।

झूठे कबीलों में, जहां आग, पानी, पत्थर पूजे जाते हैं, रहते हैं। ऐसी बेसमझी आई कि जान-बूझकर काफिरों की तरह जलते हैं।

Nijanand App

बड़के फना हो गए, और हाल होत फना।
आखिर फना सब पीछले, जाए गिनते रात दिना।।३९ ।।

घर के बूढ़े लोग मर गये। जो मौजूद हैं वह मर रहे हैं। एक दिन सबको मर जाना है। ऐसे गिनती गिनते रात-दिन बीत जाते हैं।

कहें हमको इन वतन में, मौत आवेगी अब।
नफा नुकसानी हो चुकी, फेर जनम लेवें कब।।४० ।।

कहते हैं कि हमको इसी घर में मरना है। हमारे अच्छे या बुरे कर्मों का फल हमें मिल जाएगा, अब दुबारा कब जन्म लेना है?

ऐसा मौत अपना जान के, लेत हैं नुकसान।
जाग के नफा न लेवहीं, सुन ऐसा हक फुरमान।।४१ ।।

अपनी मौत आनी ही है यह जानकर भी अपना जीवन गंवाते हैं। इस समय में भी श्री राजजी के वचनों को सुनकर मनुष्य तन का लाभ नहीं लेते।

उमर खोवें नुकसान में, पर करें नाहीं सहूर।
याद न करें तिनको, जिनका एता बड़ा जहूर।।४२ ।।

अपनी सारी उम्र संसार के व्यर्थ कामों में गंवा देते हैं पर विचार करके पारब्रह्म को याद नहीं करते जिनकी इतनी बड़ी साहेबी है।

कहें हिन्दू पीछे मौत के, हम जनम लेसी फेर।
जो अब हम भूलेंगे, तो नफा लेसी और बेर।।४३ ।।

हिन्दू कहते हैं कि हम मरने के बाद फिर से जन्म लेंगे। जो इस बार भूल जाएंगे तो अगले जन्म में सुधार लेंगे।

खेल ऐसा फरेब का, सब हवा को पूजत।
सुध दोऊ को ना परी, कायम बका सुख कित।।४४ ।।

यह ऐसा झूठा खेल है कि सब निराकार को पूजते हैं। हिन्दू मुसलमान दोनों में से किसी को अखण्ड घर के सुख कहाँ हैं, पता नहीं है।

ए तेहेकीक किने ना किया, कहावें सब बुजरक।
जेती बात ल्यावें इलम की, तिन सबों में सक।।४५ ।।

यह सब सयाने कहते हैं, पर इस बात की निश्चय किसी ने नहीं किया। जितनी बातें ज्ञान की हैं, उन सबमें संशय लाते हैं।

ए दुनियां इन विध की, ताए एती सुध सबन।
हम सब बीच फना मिने, ठौर बका न पाया किन।।४६ ।।

यह दुनियां इस तरह की है जिसमें सबको यह खबर है कि हम सब मर जाने वाले हैं फिर भी अखण्ड घर किसी ने प्राप्त नहीं किया।

Nijanand App

एता न जाने दुनियां, कहां से आए कौन हम।
आए कौन फरेब में, ए हुआ किन के हुकम।। ४७ ।।

दुनियां वालों ने इतना भी नहीं जाना कि हम कौन हैं, कहां से आए हैं और किनके हुकम से कौन से झूठे संसार में आए हैं?

सब कोई कहे हुकमें हुआ, जिन हुकम किया सो कित।
सो किनहूं ना पाइया, ताए खलक गई खोजत।। ४८ ।।

सब कोई कहता है कि संसार हुकम से बना है पर जिसने हुकम किया है वह कहां है, उसको किसी ने नहीं पाया, कई संसार के लोग खोजते रह गए।

अवतार तीर्थंकर बड़े हुए, बड़े कहावें पैगंमर।
पट बका किन खोल्या नहीं, सबों कह्या खुले आखिर।। ४९ ।।

यहां बड़े-बड़े अवतार और तीर्थंकर हुए और कई पैगम्बर हुए, किन्तु किसी ने भी अखण्ड का दरवाजा नहीं खोला। सब कहते हैं कि वक्त-ए-आखिरत में यह दरवाजे खुलेंगे।

सब पूजें खाहिस अपनी, याही फना की वस्त।
मिट्टी आग पानी पत्थर, करें याही की सिफत।। ५० ।।

सब अपनी-अपनी चाहना के अनुसार संसार की झूठी वस्तुओं की पूजा करते हैं। मिट्टी, पानी, आग, पत्थर को पूजकर उसी की प्रशंसा करते हैं।

झूठे झूठा राचहीं, दिल सांच न पावत।
ए सांच क्यों कर पावहीं, पेहेले दिल में न आवत।। ५१ ।।

झूठे संसार के लोगों को झूठा ही अच्छा लगता है। इनका दिल सच्चे को नहीं पा सकता। जब दिल में सत्य का विचार नहीं आता, तो सत्य को पाएंगे कैसे?

नासूत और मलकूत लग, इनकी याही बीच नजर।
देख किताबें यों कहें, हम पाई नहीं खबर।। ५२ ।।

इनकी नजर मृत्युलोक और बैकुण्ठ तक है। धर्मग्रन्थों को भी देखकर कहते हैं कि हमको खबर नहीं हुई।

इन बिध बोलें किताबें, देखो दिल के दीदों माहें।
कानों सुन्या सो कछुए नहीं, ए देख्या सो भी नाहें।। ५३ ।।

दिल में विचार करके देखो। धर्म के ग्रन्थ ऐसा बोल रहे हैं कि जो कुछ दिखाई देता है या सुनाई देता है, वह कुछ नहीं है।

जान बूझ पूजें फना को, कहें एही हमारा खुदाए।
हम छोड़ें ना कदीम का, जो बड़कों पूज्या इप्तदाए।। ५४ ।।

जान-बूझकर नाशवान को पूजते हैं और कहते हैं कि यही हमारा कदीमी (सदा का) खुदा है। इसे हम नहीं छोड़ सकते। हमारे पूर्व जनों ने इसकी ही पूजा की है।

Nijanand App

इस्क लगावें तिनसों, जो दुख रूपी दिन रात।
कायम सुख अर्स का, कहूं सुपने न पाइए बात।।५५।।

दिन-रात दुःख देने वालों से ही प्यार करते हैं। परमधाम के अखण्ड सुखों की स्वप्न में भी कभी बात नहीं होती।

ऐसी देखाई दुनियां, जानें सांच है हमेसगी।
सांचो विचार जब कर दिया, तब झूठों भी झूठ लगी।।५६।।

हमें दुनियां ऐसी दिखाई कि लगता है कि हम सदा से ही यहीं के हैं। जब सत की पहचान करा दी तब झूठों को भी यह झूठ लगने लगी।

हुई रात अंधेरी फरेब की, फिरत चिरागें दोए।
आप अर्स हक की, इन से खबर न होए।।५७।।

यह संसार सारा अंधेरा है। इसमें चन्द्रमा और सूर्य दो दीपक फिरते हैं जिनसे अपनी, अपने घर की और पारब्रह्म की खबर नहीं मिलती।

दुनियां इन चिराग को, रोसन कर बूझत।
आप वतन हक बका की, इनसे कछू ना सूझत।।५८।।

दुनियां वाले इन सूर्य, चन्द्रमा को ही प्रकाश देने वाले देवता मानकर पूजते हैं, परन्तु इनसे अपनी, घर की तथा श्री राजजी जो अखण्ड हैं किसी की जानकारी इन दोनों से नहीं मिलती।

ढूंढ़ थके अर्स को, चौदे तबक न पाया किन।
रात फना को छोड़ के, किन देख्या न सूर रोसन।।५९।।

चौदह लोकों के लोगों ने खोज डाला और थक गए, परन्तु अखण्ड घर किसी को नहीं मिला। इस मिट जाने वाले संसार को छोड़कर किसी ने अखण्ड ज्ञान रूपी सूर्य को नहीं देखा।

चौदे तबक जुलमत से, पेहेले कही जो रात।
दिन कायम सूर अर्स की, इत काहूं न पाइए बात।।६०।।

चौदह तबक निराकार से पैदा हैं। इसे पहले ही अज्ञान के अन्धकार की रात कहा है। इसमें अखण्ड ज्ञान के सूर्य की कहीं बात भी नहीं होती जो घर परमधाम का रास्ता बताते।

सूर ऊग्या तब जानिए, ए रोसन हुआ अर्स हक।
दुनियां सब के अंग में, काहूं जरा न रही सक।।६१।।

ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है, यह तब जाना जाए जब अखण्ड घर और श्री राजजी महाराज की पहचान मिल जाए और दुनियां के सभी लोगों में किसी भी तरह का कोई संशय न रह जाए।

अर्स बका जाहेर हुआ, तब हुई फजर।
अर्स देखाया इलमें, खुली बातून सबों नजर।।६२।।

अखण्ड घर परमधाम जब जाहिर हो जाएगा तब समझ लेना ज्ञान का सवेरा हो गया और जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान ने परमधाम दिखाकर सबकी बातूनी नजर खोल दी।

Nijanand App

हकीकत कुरान में, ए लिखी नीके कर।
सबको करसी कायम, जाहेर हुए कायम खबर।। ६३ ।।

यह हकीकत कुरान में अच्छी तरह से लिखी है कि पारब्रह्म के जाहिर होने की खबर मिलने पर कायमी सबको मिल जाएगी।

जो होसी रूहें अर्स की, तिन आवे ईमान अव्वल।
आखिर तो सब ल्यावसी, दोजख की आग जल।। ६४ ।।

जो परमधाम की रूहें होंगी उन्हें सबसे पहले ईमान आएगा। अन्त में तो दोजख की आग में जलने (पश्चाताप) के बाद तो सभी ईमान लाएंगे।

सो ताला इन मुसाफ का, क्यों खुले ईमान बिन।
खोले ताला फरेब क्यों रहे, जब उग्या बका अर्स दिन।। ६५ ।।

कुरान के छिपे भेदों को ईमान के बिना कैसे खोला जाए? यह ताला खुल जाए तथा अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उदय हो जाए फिर यह झूठा संसार कैसे रह पाएगा?

जोलों ताला खुले नहीं, द्वार अथरवन कतेब।
पाई ना तरफ हक बका, ना कछू खेल फरेब।। ६६ ।।

जब तक अथर्ववेद और कुरान के रहस्य नहीं खुलेंगे, तब तक न अखण्ड घर की और न झूठे संसार के खेल की पहचान होगी।

ए हकीकत जिनकी, अपनी खोले सोए।
सो खोले हक जाहेर हुआ, तब क्यों कर रेहेवे दोए।। ६७ ।।

यह जिनकी हकीकत है वही इनको खोलेंगे और उसके खुलने से ही पारब्रह्म जाहिर होंगे। तब सत्य और झूठ, अर्थात् ब्रह्मसृष्टि और संसार दोनों कैसे रहेंगे?

फरेब कछुए न रह्या, रोसन उमत करी जब।
हक अर्स जाहेर हुआ, तब कायम दुनी हुई सब।। ६८ ।।

जब ब्रह्मसृष्टियों में ज्ञान का उजाला कर दिया तब श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की सबको पहचान हो गई। फिर पहचान के बाद संसार का प्रलय होगा और सब बहिश्तों में कायम होंगे।

लिख्या दिन बका मुसाफ में, खोले बातून होसी फजर।
लिए हकीकत हैयाती, बका सुख पावें आखिर।। ६९ ।।

कुरान में संसार के अखण्ड होने की बात लिखी है। यह तभी होगा जब कुरान के छिपे रहस्य खुल जाने के बाद ज्ञान का सवेरा होगा और सबको अखण्ड की पहचान हो जाएगी। फिर सभी अखण्ड बहिश्तों के सुख पाएंगे।

कुन्जी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए।
फुरमान खुले आखिर, हाथ सूरत हकी जे।। ७० ।।

श्यामा महारानी जी के हाथ तारतम ज्ञान की चाबी भेजी, परन्तु वह कुरान के भेद नहीं खोल सके। कुरान के छिपे रहस्य आखिर में हकी सूरत इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी से खुले।

Nijanand App

सहूर दिया साहेब ने, फुरमान भेज्या हाथ रसूल।
पावे न हकीकत मुसाफ की, ए खोलिए किन सूल।।७१।।

धाम धनी ने रसूल भेजा और उसके रहस्यों को खोलने के लिए तारतम ज्ञान दिया। बिना इसके कुरान के भेद कैसे खोले जाएं?

रसूल कहे फुरमान में, मेरी तीनों एक सूरत।
सो पोहोंची नजीक हक के, और कोई न पोहोंच्या तित।।७२।।

कुरान में रसूल साहब (हुकम का स्वरूप) कहते हैं कि मेरी बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरतें एक हैं जो श्री राजजी महाराज के नजदीक पहुंचीं जहां और कोई नहीं पहुंच सका।

बसरी मलकी और हकी, माहें फैल तीनों के।
सो खोले फुरमान को, आखिर सूरत हकी जे।।७३।।

बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरतों की करनी कुरान में लिखी है और यह भी लिखा है कि आखिरी हकी सूरत ही इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को खोलेगी।

और चाहे कोई खोलने, क्यों कर खोले सोए।
सो कौल खोले हक हुकमें, फैल हाल जिनों के होए।।७४।।

कुरान के रहस्य के भेद खोलना चाहे तो कौन खोल सकेगा। श्री राजजी महाराज का जिसे हुकम होगा अपनी करनी, रहनी से वही भेद खोलेगा।

हुआ दीदार सब मेयराज में, जो हरफ कहे हकें मुझ।
जो छिपे रखे मैं हुकमें, सो कौन जाहेर करे मेरा गुझ।।७५।।

रसूल साहब कहते हैं कि मुझे पारब्रह्म का दर्शन हुआ और मुझे नब्बे हजार हरफ कहे जिनको मैंने हुकम से छिपाकर रखा है। उस मेरे छिपे रहस्य को दूसरा कौन जाहिर करेगा?

जो हुकम हुआ जाहेर का, सो जाहेर किए मैं तब।
बाकी रखे जो हुकमें, सो हुकमें जाहेर करों अब।।७६।।

श्री राजजी महाराज का जब जाहिर करने का हुकम हुआ, तभी मैंने उन्हें जाहिर किया। बाकी जो हुकम से छिपाकर रखा था वह अब उनके हुकम से जाहिर करूंगा।

ए बातें सब मेयराज की, करें जाहेर तीन सूरत।
और कोई न केहे सके, ए अर्स हक न्यामत।।७७।।

यह सब मेयराज (दर्शन) की बातें मेरी तीन सूरत बसरी, मलकी और हकी जाहिर करेंगी। यह अखण्ड घर की न्यामत हैं। उसे और कोई जाहिर नहीं कर सकता।

और तीनों सूरत, रूहें फरिस्ते उमत।
जो आखिर इनों में गुजरी, मुसाफ में सोई हकीकत।।७८।।

मेरी इन तीन सूरतों में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की जमात में आखिर तक जो गुजरेंगी वह कुरान में सब लिखा है।

Nijanand App

सो खोले आपे अपनी, हकीकत फुरमान।
खोले परदे नूर पार के, हुई अर्स पेहेचान।। ७९ ।।

वह अब अपने कुरान की हकीकत को स्वयं खोलेंगे और अक्षर के पार परमधाम की पहचान अज्ञान के परदे को हटाकर कराएंगे।

सक जरा किन ना रही, जब खोले ताले ए।
हुआ सूर बका अर्स जाहेर, लिख्या मुसाफ में जे।। ८० ।।

जब इस कुरान के छिपे भेदों के ताले खुल गए तब किसी को जरा भी संशय नहीं रह गया। उस समय अखण्ड ज्ञान का सूर्य परमधाम जाहिर होगा (ऐसा कुरान में लिखा है)।

ए इलम आए पीछे, नींद आवत क्यों कर।
जब सक जरा न रही, रूहों क्यों न आवे याद घर।। ८१ ।।

ऐसा जागृत बुद्धि की तारतम वाणी आने के बाद भी मोमिनों को माया की चाहना क्यों लगी है? जब थोड़ा सा भी संशय बाकी नहीं रहा तो रूहों को अपने घर की याद क्यों नहीं आती?

याद करो बीच अर्स के, जो हकसों किया मजकूर।
मांग्या खेल फरामोस का, बैठ के हक हजूर।। ८२ ।।

हे मोमिनो! परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने जो हमने वार्तालाप किया था, उसे याद करो। हमने श्री राजजी महाराज के चरणों में बैठकर फरामोशी का खेल मांगा था।

तुम बका सुख छोड़ के, खेल मांग्या हांसी को।
सो देखो हकीकत अपनी, हकें भेजी फुरमान मों।। ८३ ।।

तुमने अखण्ड सुख को छोड़कर हंसी का खेल मांगा। वह अपनी सब हकीकत देखो जो कुरान में लिखी है।

खेल देखाया तुमको, वास्ते तफावत।
इत याद देत सुख पावने, हक बका निसबत।। ८४ ।।

श्री राजजी महाराज ने तुमको फर्क दिखाने के वास्ते खेल दिखाया है। यहां पर श्री राजजी महाराज अखण्ड घर और अखण्ड सुख को पाने के वास्ते याद दिला रहे हैं।

इन झूठी जिमी में बैठाए के, देखाई हक बका निसबत।
मेहेर करी रूहों पर, देने अर्स लज्जत।। ८५ ।।

इस झूठे संसार में बिठाकर श्री राजजी महाराज की अपनी निसबत की और अखण्ड घर की पहचान कराई। रूहों को परमधाम की लज्जत देने के वास्ते ही यह मेहर की है।

इन ख्वाब जिमी में बैठ के, अर्स सुख लीजे इत।
हक याद देत तिन वास्ते, सब बका न्यामत।। ८६ ।।

इन झूठी जमीन में बैठकर घर के अखण्ड सुख यहीं लीजिए, इसलिए श्री राजजी महाराज अखण्ड घर की सब न्यामतों को याद दिला रहे हैं।

Nijanand App

कैसा इलम था तुम पे, पूजते थे किन को।
कैसे झूठे कबीले में थे, अब आए किनमों।। ८७ ।।

इस तारतम वाणी मिलने से पहले तुम्हारे पास कौन सा ज्ञान था, तुम किसकी पूजा करते थे, तुम कैसे झूठे परिवार में थे, अब किनके बीच आ गए हो?

कौन किया था वतन, जामें कबूं मिटी ना सक।
कौन फना सोहोबत में, कहावते थे बुजरक।। ८८ ।।

तुमने कौन सा घर बना लिया था जिसमें तुम्हारे कोई संशय कभी नहीं मिटे? किन झूठों की संगति में थे और अपने आपको बड़ा कहलवाते थे।

अब कैसा पाया हक इलम, कैसे हुए बेसक।
कैसा पाया बका वतन, कैसा पाया धनी हक।। ८९ ।।

अब तुम्हें श्री राजजी महाराज से कैसा ज्ञान मिला और किस तरह संशय रहित हुए? कैसे अखण्ड घर को पाया और कैसे सच्चे धनी को पाया?

कैसा पाया रूहों कबीला, कैसी पाई हक निसबत।
कैसे दुख से निकस के, पाई सांची न्यामत।। ९० ।।

कैसे तुमने अपने सुन्दरसाथ के परिवार को पाया? कैसे तुमने अपने धाम धनी के सम्बन्ध की पहचान की? तुमने कैसे दुःख से निकल कर सच्ची न्यामत पाई है?

कैसे फना में हुते, आए कैसे बका वतन।
आए कैसे सुख में, छूटी कैसी जलन।। ९१ ।।

तुम कैसें मिटने वाले संसार में थे? अब कौन से अखण्ड घर में आ गये हो? तुम कैसे सुख में आ गये हो? तुम्हारी संसार की जलन कैसे शान्त हो गई है?

कैसे झूठे घर हुते, पाई कैसी अर्स मोहोलात।
जागत हो के नींद में, कछू विचारत हो ए बात।। ९२ ।।

तुम कैसा झूठा घर बनाकर बैठे थे? अब कैसी अखण्ड घर की मोहोलातें मिली हैं? इन सबके बाद विचार करो कि तुम जागृत अवस्था में हो कि नींद में?

कौन जंगल गुमराह में हुते, कैसा पाया अर्स बाग।
नींद उड़ाओ विचार के, क्यों ना देखो उठ जाग।। ९३ ।।

तुम कैसे जंगलों में भटकते थे? अब अखण्ड घर के बगीचे कैसे मिले? विचार करके अपनी माया की नींद उड़ाओ और जागृत होकर उठकर देखो।

चरकीन जिमी में बैठ के, कैसी लेते थे वाए।
अब वाए झरोखे अर्स के, कैसी लेत हो अब आए।। ९४ ।।

इस नरक भरे संसार में बैठकर कैसी गन्दी बदबू की हवा लेते थे? अब परमधाम के झरोखे से आने वाली हवा कैसी लग रही है?

Nijanand App

कौन बदबोए में हुते, अब आई कौन खुसबोए।
सहूर अपने दिल में, तौल देखो ए दोए।। ९५ ।।

तब कौन सी बदबू में थे? अब कौन सी खुशबू आई? अब अपने दिल में विचारकर दोनों को तौल कर देखो।

ए कैसा था दुख वजूद, दुख में थे रात दिन।
अब पाया सुख अर्स ठौर में, और कैसे अर्स तुम तन।। ९६ ।।

संसार में तुम्हारा तन कैसा दुःखदायी था और रात-दिन दुख में ही बीतते थे। अब अखण्ड घर के सुख प्राप्त हुए हैं। अब परमधाम के तुम्हारे तन कैसे लग रहे हैं?

कैसे सुख पाए कायम तन के, किनसों हुआ मिलाप।
अब देखो साहेब अर्स का, पूछो रूह अपनी आप।। ९७ ।।

तुमने अखण्ड तनों के कैसे सुख पाए और तुम्हारा किनसे मिलाप हुआ? अब अपने धाम के धनी को देखो और अपनी आत्मा से स्वयं पूछो।

कहां रात दिन गुजरानते, अब पाया अर्स रात दिन।
देखो दिल विचार के, कछू फरक है उन इन।। ९८ ।।

संसार में दिन-रात कहां बिताते थे? अब परमधाम के रात-दिन कैसे लगते हैं? अब दिल से विचारकर देखो क्या इनमें और उनमें कुछ अन्तर है?

कैसी झूठी निसबत में, करते थे गुजरान।
अब निसबत भई अर्स की, लेत संग सुभान।। ९९ ।।

संसार में तुम्हारे कैसे झूठे सम्बन्धी थे जिनमें तुम रहते थे? अब तुम्हारा सम्बन्ध परमधाम में श्री राजजी महाराज से हो गया है।

पेहेनावा फना मिने, और पेहेनावा अर्स का।
कछू पाई है तफावत, तुम देखो दिल अपना।। १०० ।।

संसार के पहनावे और परमधाम के पहनावे को देखो और दिल में विचारकर देखो क्या कुछ फर्क दिखाई देता है?

अब जिमी फना के, और जिमी बका पटंतर।
पसु पंखी देखो फना के, देखो अर्स जानवर।। १०१ ।।

अब संसार की झूठी जमीन में और अखण्ड परमधाम की भूमि में अन्तर देखो। संसार के पशु-पक्षियों को देखो और अखण्ड घर के जानवरों को देखो।

देखो ताल नदा झूठी जिमी, और देखो अर्स हौज जोए।
करो याद सुख द्यो रूह को, दिल देख तफावत दोए।। १०२ ।।

संसार के झूठे तालाब, नदियां देखो और परमधाम के हौज कौसर तालाब और जमुनाजी को देखो। दिल से इन दोनों के फर्क को देखकर अपने घर को यादकर अपनी आत्मा को सुख दो।

Nijanand App

दिल मजाजी और हकीकी, कहे कुरान में दोए।
ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अर्स की होए।। १०३ ।।

झूठे और सच्चे दिलों की हकीकत कुरान में लिखी है। जो मोमिन परमधाम के होंगे, वह इस फर्क को देख लेंगे।

दिल मजाजी दुनी का, इत अबलीस पातसाह।
सो औरों दुस्मन और आपका, मारत सबकी राह।। १०४ ।।

दुनियां का दिल झूठा है और इसमें शैतान अबलीस की बादशाही है। यह दूसरों का और आपका दुश्मन है तथा सबको गुमराह करता है।

और दिल हकीकी मोमिन, सो कह्या है अर्स हक।
तरफ नहीं दिल पाक की, जित साहेब की बैठक।। १०५ ।।

मोमिनों के दिल सच्चे हैं। उनमें हक की बैठक है। जहां पारब्रह्म स्वयं बैठे हों, उस दिल की तरफ शैतान नहीं जाता।

इस्क मोमिन और दुनी का, कछू देखत हो फरक।
अब इस्क ल्यो दिल अपने, तुम दिल अर्स बुजरक।। १०६ ।।

क्या मोमिनों के और दुनियां वालों के इश्क में कुछ अन्तर दिखाई पड़ता है? तुम्हारे दिल में पारब्रह्म बैठे हैं। अब अपने ही दिल में उनसे इश्क करो।

महामत कहे ऐ मोमिनों, जो दिए थे दिल भुलाए।
फरामोस से बीच होस के, अब साहेब लेत बुलाए।। १०७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! फरामोशी ने तुम्हारे दिलों को भुला दिया था। अब उस फरामोशी से सावचेत करके धनी तुमको बुलाते हैं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ८७६ ।।

आसिक मेरा नाम, रूह-अल्ला आसिक मेरा नाम।
इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम।। १ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि हे श्यामाजी! मेरा नाम आशिक है। मेरा इश्क रूहों से है और रूहों के सुख में ही मेरा सुख है।

इलम ले चलो अर्स का, खोल द्यो हकीकत।
भूल गईयां आप अर्स को, याद देओ निसबत।। २ ।।

परमधाम की जागृत बुद्धि का तारतम लेकर दुनियां में जाओ और मोमिनों को सब हकीकत बताओ। वह खेल में जाकर अपने आपको और घर की सब हकीकत को भूल गए हैं। उन्हें पहचान कराओ कि मैं उनका धनी हूं।

इसारतें रमूजें इत की, लिखी माहें फुरमान।
सो भेज्या हाथ रसूल के, मिलाए देओ निसान।। ३ ।।

यहां की सब हकीकत को मैंने इशारतों और रमूजों में कुरान में लिखा जो रसूल साहब लेकर आए हैं। उनके गुझ (गुह्य) भेदों को ले जाकर तारतम वाणी से मिलाकर पहचान कराओ।

Nijanand App